9 वर्ष से 11 वर्ष के बच्चों के लिए

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना पुस्तकों के प्रोन्नयन और पठन अभिरुचि के विकास के उद्देश्य से सन् 1957 में भारत सरकार (उच्चतर शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय) द्वारा की गई थी। न्यास द्वारा हिंदी, अँग्रेजी सहित 30 से अधिक भाषाओं व बोलियों में पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। बच्चों की पुस्तकों का प्रकाशन सदैव से संस्था की प्राथमिकता रहा है।

रणीराम गढ़वाली : मूल नाम 'रानू', लेकिन 'रणीराम गढ़वाली' के नाम से साहित्य की अनेक विधाओं में लेखन। अब तक चार कहानी-संग्रह, दो बाल कहानी-संग्रह व एक लघुकथा संग्रह प्रकाशित। 'साहित्यालंकार' की उपाधि से सम्मानित तथा 'उत्तरांचल जनमंच' का पुरस्कार प्राप्त। कहानियों का अनेक भारतीय भाषाओं में अनुवाद। संप्रति मिलिट्री इंजीनियरिंग सर्विस, दिल्ली में सेवारत।

सैबाल चटर्जी : गवर्मेंट कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, कोलकाता में चित्रकार के रूप में कार्य किया। संप्रति स्वतंत्र चित्रकार के रूप में कोलकाता में कार्यरत।

ISBN 978-81-237-7873-0

पहला संस्करण : 2016 *(शक* 1938*)*

Gonu Ka Kuan *(Original Hindi)*

₹ 50.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

गोनू का कुआँ

रणीराम गढ़वाली
चित्र : शैबाल चैटर्जी



nbt.india
एकः सूते सकलम्
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

चंपक वन में कई दिनों से बारिश न होने व तेज गरमी पड़ने के कारण पानी की कमी हो गई थी। अधिकांश झरने व तालाब सूख गए थे। एकमात्र टिन्नू झरने में ही थोड़ा पानी बह रहा था। इसी पानी से चंपक वन के सभी प्राणी अपना काम चला रहे थे। लेकिन बढ़ती गरमी के प्रकोप से टिन्नू झरने में लगातार पानी की कमी थी। इस कारण चंपक वन के सभी जानवर बेहद दुखी व परेशान दिखाई दे रहे थे।







चिलचिलाती गरमी को देखकर एक दिन टिन्नी गिलहरी ने गोनू चूहे से कहा, “गोनू, मेरे दिमाग में बार-बार यह खयाल आता है कि अगर टिन्नू झरना भी सूख गया तो फिर हम क्या करेंगे? मेरे खयाल से तो हमें समय रहते ही अपना ठिकाना ढूँढ़ लेना चाहिए।”

“हाँ... बात तो ठीक है। क्यों न हम इस बारे में लंबू दादा व कालू काका से भी बात करें?”

“ठीक है। चलकर उनकी भी राय ले लेते हैं।”







टिन्नी और गोनू जब बातें करते हुए लंबू हाथी के घर पहुँचे तो वहाँ कालू भालू भी था और लंबू हाथी के साथ शतरंज खेल रहा था। "अरे... तुम दोनों! आओ... आओ। कैसे आना हुआ?" लंबू हाथी ने कहा।

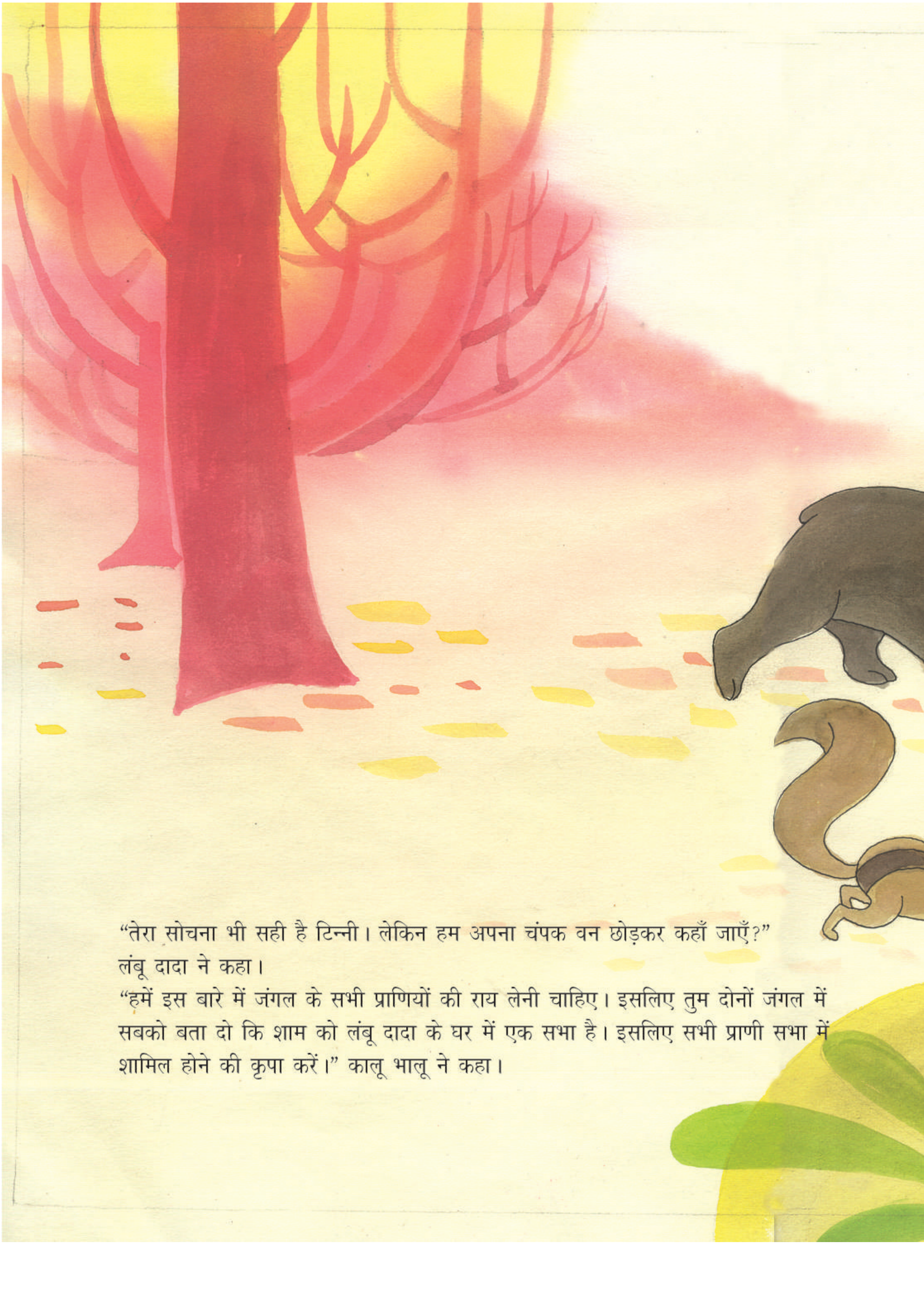
"दादा, यह अच्छा ही हुआ कि आप दोनों एक ही साथ मिल गए। आप दोनों से एक राय लेनी थी," टिन्नी गिलहरी ने कहा।

"अरे, तो इसमें घबराने की क्या बात है? बोलो न, कैसी राय लेनी है?"

"दादा, टिन्नू झरना भी कब सूख जाए कुछ पता नहीं। मेरे खयाल से तो हमें चंपक वन छोड़कर अन्यत्र किसी ऐसे जंगल में चले जाना चाहिए जहाँ भरपूर मात्रा में पानी हो।"



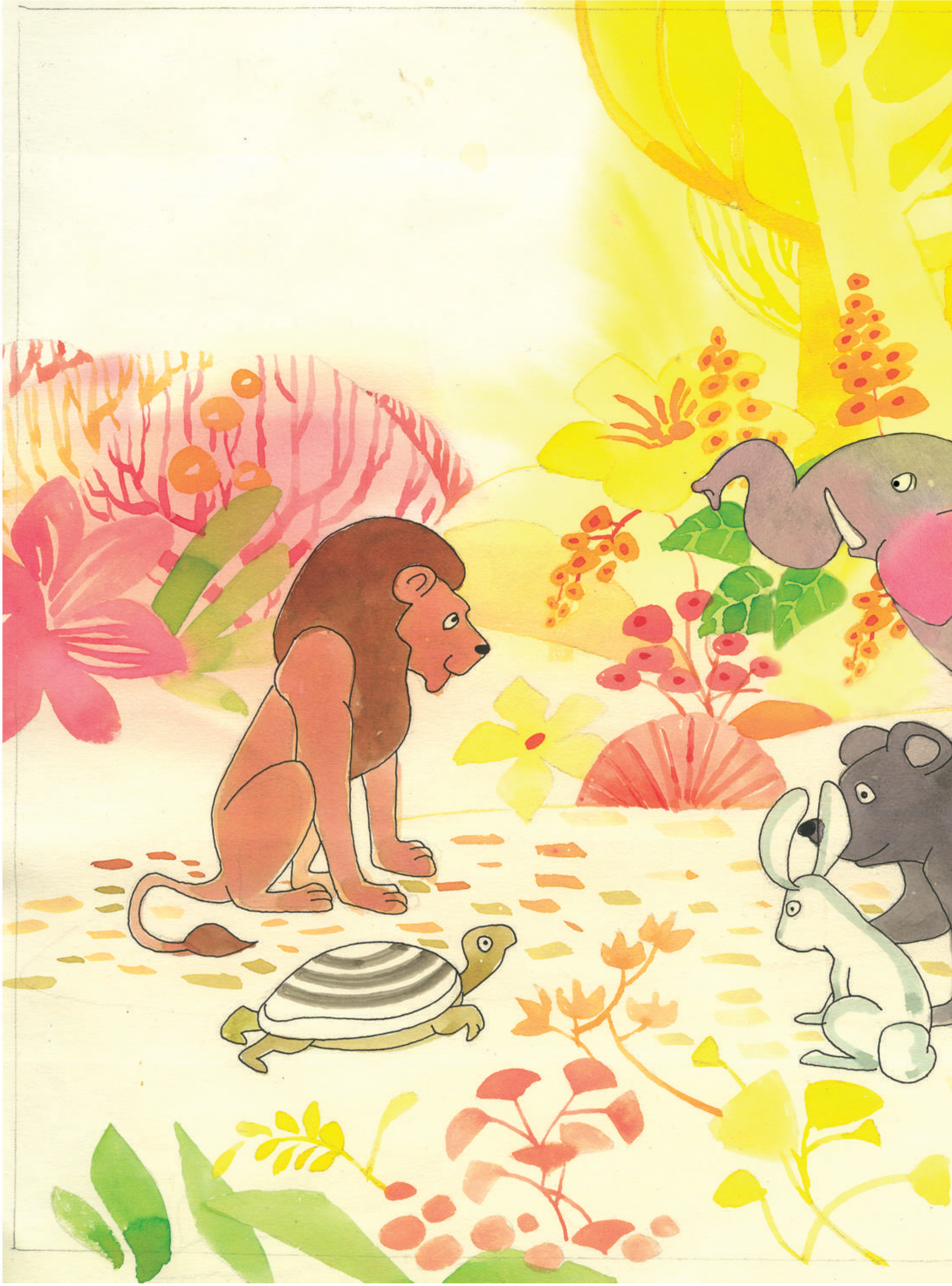




"तेरा सोचना भी सही है टिन्नी। लेकिन हम अपना चंपक वन छोड़कर कहाँ जाएँ?" लंबू दादा ने कहा।

"हमें इस बारे में जंगल के सभी प्राणियों की राय लेनी चाहिए। इसलिए तुम दोनों जंगल में सबको बता दो कि शाम को लंबू दादा के घर में एक सभा है। इसलिए सभी प्राणी सभा में शामिल होने की कृपा करें।" कालू भालू ने कहा।







उन दोनों ने पलभर में ही यह खबर सारे जंगल में फैला दी। यही कारण था कि शेर खान के साथ-साथ जंगल के सभी प्राणी शाम को लंबू दादा के घर पहुँच गए।

"क्या बात है लंबू? किसलिए तुमने हम सबको यहाँ बुलाया है?" शेर खान ने कहा।

"महाराज, एक समस्या है। उसी के समाधान के लिए बुलाया है। टिन्नी गिलहरी व गोनू चूहे का कहना है कि टिन्नू झरने के सूखने से पहले ही हमें चंपक वन को छोड़कर कहीं अन्यत्र चले जाना चाहिए," लंबू हाथी ने अपनी सूँड़ उठाते हुए कहा।

लंबू हाथी की बात सुनकर शेर खान कुछ पल खामोश रहने के बाद बोला, "यह सच है लंबू कि बारिश न होने के कारण जंगल में पानी की कमी हो गई है, फिर भी हमें बिना सोचे-समझे अपना जंगल नहीं छोड़ना चाहिए। क्या पता, बारिश हो ही जाए!"

"मेरे विचार से तो महाराज सही कह रहे हैं," लालू बघेरा ने कहा।









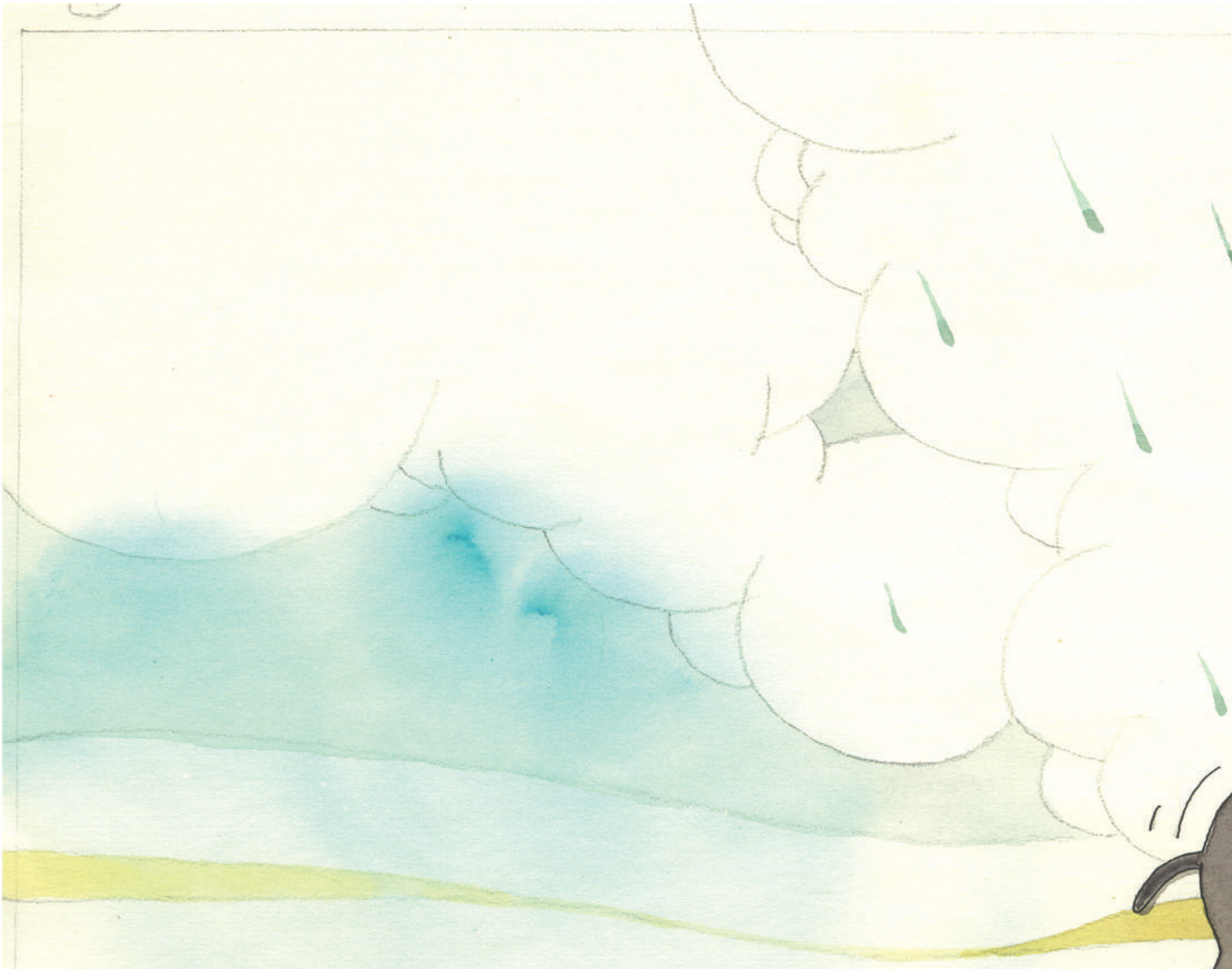
कुछ पल के लिए सभा में फिर खामोशी छा गई। किसी को भी कोई उचित राय नहीं सूझ रही थी। तभी कालू भालू ने कहा, "आज चंपक वन को छोड़ने की बात हो रही है, कल दूसरे जंगल को छोड़ने की बातें होंगी। अगर हमने पानी का सही उपयोग किया होता तो आज ये मुसीबत नहीं आती। आने वाले समय के बारे में तो हमने सोचा ही नहीं। जो कोई जंगल छोड़कर जाना चाहता है, वह जा सकता है।"





"कालू ठीक कह रहा है," कहते हुए शेर खान चला गया। उसके साथ ही सभी प्राणी अपने-अपने घरों को चले गए।





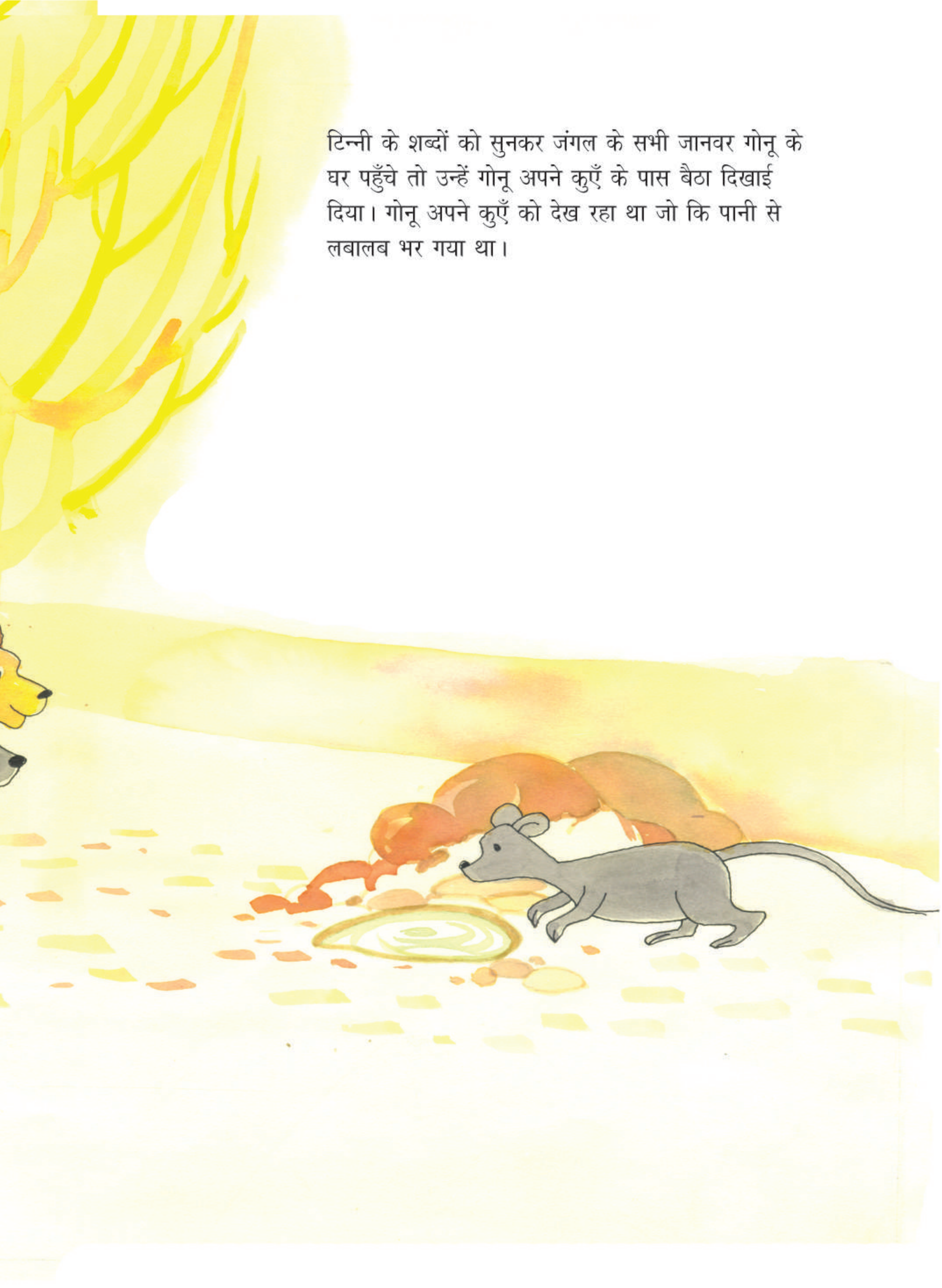
लेकिन एक दिन अचानक ही चंपक वन में तेज बारिश होने लगी। चंपक वन के सभी प्राणी खुश होकर तेज बारिश में नाचने लगे। लेकिन गोनू चूहे को न देखकर शेर खान ने कहा, “गोनू नहीं दिखाई दे रहा है, टिन्नी। क्या वह जंगल छोड़कर चला गया है?”

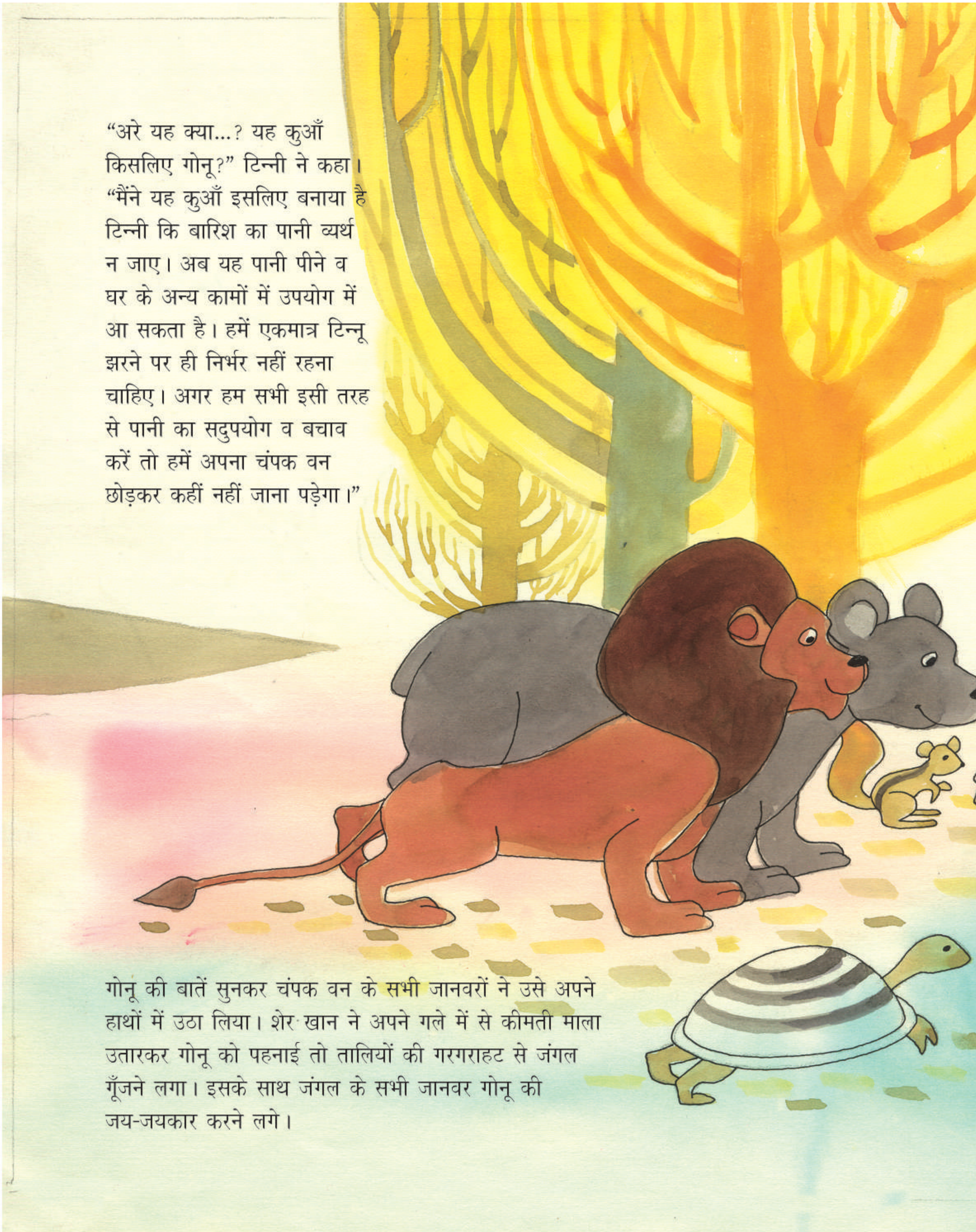
“पता नहीं महाराज, गोनू मुझे भी कई दिनों से नहीं मिला। क्यों न उसके घर जाकर देखें कि वह कहाँ है?”





टिन्नी के शब्दों को सुनकर जंगल के सभी जानवर गोनू के घर पहुँचे तो उन्हें गोनू अपने कुएँ के पास बैठा दिखाई दिया। गोनू अपने कुएँ को देख रहा था जो कि पानी से लबालब भर गया था।





"अरे यह क्या...? यह कुआँ किसलिए गोनू?" टिन्नी ने कहा। "मैंने यह कुआँ इसलिए बनाया है टिन्नी कि बारिश का पानी व्यर्थ न जाए। अब यह पानी पीने व घर के अन्य कामों में उपयोग में आ सकता है। हमें एकमात्र टिन्नू झरने पर ही निर्भर नहीं रहना चाहिए। अगर हम सभी इसी तरह से पानी का सदुपयोग व बचाव करें तो हमें अपना चंपक वन छोड़कर कहीं नहीं जाना पड़ेगा।"

गोनू की बातें सुनकर चंपक वन के सभी जानवरों ने उसे अपने हाथों में उठा लिया। शेर खान ने अपने गले में से कीमती माला उतारकर गोनू को पहनाई तो तालियों की गरगराहट से जंगल गूँजने लगा। इसके साथ जंगल के सभी जानवर गोनू की जय-जयकार करने लगे।



इन्डिका इन्फोमीडिया, नई दिल्ली द्वारा शब्द संयोजन तथा गोपसंस पेपरस लिमिटेड, नोएडा द्वारा मुद्रित